कवि परिचय

चैत्र मास तिथि चतुर्थी, शुक्ल पक्ष शशिवार ।
प्रातः दशवादन समय, लिया मनुज वपु धार ।। १ ।।

दो सहस्त्र पन्द्रह रहा, विक्रम का वह अब्द ।
पण्डित होरी लाल गृह, मुखर पौत्र का शब्द ।। २ ।।

मेष राशि शुभ लग्न वृष, भरणी था नक्षत्र ।
श्री भगवान दयाल गृह, उदित हुआ सत् पुत्र ।। ३ ।।

तुला राशि गुरु राहु थे, वुध रवि थे मीनस्थ ।
धनु में शनि शशि मेष में, भौम शुक्र मकरस्थ ।। ४ ।।

उस बेला बव करण में, योग रहा विष्कुम्भ ।
पीड़ा के थे विषम क्षण, शिव का था अवलम्ब ।। ५ ।।

मध्य नाडि गजयोनि में, मानव गण में गण्य ।
राम सहेली जननि से, उपजा व्यक्ति नगण्य ।। ६ ।।

कलावती सुपितामही, थीं वत्सलता मूर्ति ।
उनके आज अभाव की कैसे होगी पूर्ति ।। ७ ।।

शिव कुमार था रख दिया, जनकाग्रज ने नाम ।
अशिव कार्य उसके सदा, अनृत हुआ अभिधान ।। ८ ।।

मैनपुरी जनपद सुभग, सढ़ नामक है ग्राम ।
भारत उत्तर प्रान्त में, विकसे इन्द्रिय ग्राम ।। ९ ।।

मध्य देश भोपाल में, जनक कर रहे कार्य ।
किया अध्ययन बाल ने, गुरुवर थे सत्कार्य ।। १० ।।

सर्व प्रथम रहकर सदा, शिक्षा की शुभ प्राप्त ।
गुरुजन स्नेह सदा रहा, मित्रमान बहु आप्त ।। ११ ।।

संस्कृत भाषा भारती, अर्थ शास्त्र भूगोल ।
सुधामयी गुरुकृपा से, पाया ज्ञान अमोल ।। १२ ।।

विद्यार्जन रत छात्र था, वधू मिली रत्नेश ।
जीवन तब से बन गया, सुखद प्रणय रत्नेश ।। १३ ।।

केन्द्रीय शासन का हुआ, अधिकारी उपयुक्त ।
अपनी निष्ठा लगन को, किया सतत सुप्रयुक्त ।। १४ ।।

मध्य देश कटनी नगर, मध्य किया जब कार्य ।
प्रभु ने लेखन कर्म को, बना दिया अनिवार्य ।। १५ ।।

सतत प्रेरण शम्भु की, लिखा गई "राधेय" ।
इस जन को कवि कर्म तो, रहा सदा अज्ञेय ।। १६ ।।

चौदह सर्गो में किया, वसु का चरित्र निबद्ध ।
मुदित देख उद्यम हुए, वांङ्गमय के तप वृद्ध ।। १७ ।।

जिसकी पावन कृपा ही, लिखा गई 'राधेय' ।
वही बना सकता पुनः, "अश्वत्थ्मा" गेय ।। १८ ।।

वीस शती के शेष थे, मात्र चार जब अब्द ।
संयोजित होने लगे, ईश कृपा से शब्द ।। १६ ।।

अविच्छिन्न है काल का, सन्तत सहज प्रवाह ।
अवरोधों से पूर्ण थी, पर कृपीज की राह ।। २० ।।

शासन सेवा निरत की, वाणी सेवा चाह ।
होती ज्यों मरुदेश में, लघु सरिता की राह ।। २१ ।।

षट् संवत्सर पूर्व जो, बीज हुआ था उप्त ।
बना पूर्ण विकसित विटप, सौरभ सुमन अगुप्त ।। २२ ।।

बद्धमूल होता कभी, मृषा लोक अपवाद ।
महापुरुष को भी पड़ा, सहना गुरु अवसाद ।। २३ ।।

ऋषि संतति भी यदि हुई, कोपावेग विमूढ़ ।
किसके कर में क्षेमकर, हेति प्रश्न यह गूढ़ ।। २४ ।।

दिव्य मनीषा का अहा! इतना कुटिल प्रयोग ।
करके नर बस कर रहा, निज विनाश उद्योग ।। २५ ।।

निर्वासित कर भावना, तर्क हुआ अधिराज ।
हेम तृषाकुल भ्रान्त है, जग मरु मध्य समाज ।। २६ ।।

महारथी उस द्रौणि का, गुरु अनुशय अनुताप ।
हरे शक्तिमद मनुज का, टले विषम भव ताप ।। २७ ।।

नहीं दिव्य आयुध बचे, दिव्य पुरुष से हीन ।
इस वसुधा को आसुरी, शक्ति न करे मलीन ।। २८ ।।

आशिष यदि देते नहीं, कवि वरेण्य विद्वान ।
जलनिधि कैसे तैरता, यदि न सदय, ईशान ।। २६ ।।

अष्टादस अध्याय में अश्वत्थामा वृत्त ।
वर्णित विविध प्रकार के पन्द्रह शतक सुवृत्त ।। ३० ।।

किया शारदा को समुद, अर्पित अपर प्रसून ।
मति अनुभव पटुता कहाँ, कवि कौशल अति न्यून ।। ३१ ।।